Lecture-112.

वर्त्तमान के संदर्भ में वैश्वीकरण का औचित्य

- ममता रानी
अतिथि सहायक प्राध्यापक
इतिहास विभाग
एल० एन० एल० आर०
के० एल० कॉलेज,
सहरसा

बी० ए० पार्ट-IIIrd.

वैश्वीकरण के पक्ष के साथ-साथ कृषि जगत और वामपंथी विचार धारा के लोगों ने इसकी आलोचना भी किया है उनके अनुसार- वैश्वीकरण और नीजिकरण उदारीकरण ने मूलक भोग है अतः इसको अपनाने से सार्वजनिक इकाई का क्षेत्र भारत में संकुचित हो रहा है और आने वाले कल के लिए शुभ संकेत नहीं है

वैश्वीकरण से सार्वजनिक क्षेत्र पर हमला [illegible] हो रहे है इसके चलते रोजगार के अवसर भी कम हुए है तथा बेरोजगारों की संख्या में वृद्धि भी हुआ है क्योंकि 2007-8 की विश्व आर्थिक मंदी ने भारत को भी भारत को भी अपने चपेट में ले लिया था

वैश्वीकरण का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य बड़े पैमाने पर निवेश करने का होता है जिससे भारत में लघु विकास धीरे और कृषि तथा लघु क्षेत्र में कुटिर उद्योग धीरे धीरे चले जा रहे है जिससे गरीबी और ग्रामीण असमानता बढ़ी आम लोगों का जीवन स्तर पूर्ण रूप से ऊपर नहीं उठ पा रहा है

उपर्युक्त मूल्यांकन से यह स्पष्ट है कि इसके सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह के प्रभाव भारत पर दिखाई पड़ता है लेकिन यह भी सत्य है कि विश्व के आर्थिक दौड़ में साथ बने रहने के लिए और विकास की गति को तेज करने के लिए 5
[illegible] अपने को अलग भी नहीं रखा जा सकता है

वैश्वीकरण का एक सकारात्मक पहलू यह है कि निर्मित वस्तुओं की गुणवत्ता में समझौता नहीं किया जाता है और यह निर्धारित मानक के अनुसार बाजार में उपभोक्ताओं के लिए लाया जाता है।

वैश्वीकरण ने सम्पूर्ण विश्व को एक छोटी सी गाँव के रूप में तब्दील कर दिया है अर्थात विश्व व्यापार संगठन के माध्यम से लगभग सभी देश एक दूसरे से आर्थिक विकास की गति को तेज करने के लिए जुड़ गए हैं जिससे विदेशी मुद्रा में वृद्धि हो रहा है और यह भारत पर भी लागु होता है।

विदेशी मुद्रा में वृद्धि से भारतीय आर्थिक विकास की गति में भी वृद्धि दिखाई पड़ रहा है। एक पत्रिका के सर्वेक्षण द्वारा 2014 तक भारत इसी गति से विकास करता रहा तो विश्व में वह तीसरे स्थान पर आ जाएगा। आर्थिक विकास गति में वृद्धि से भुगतान संतुलन अनुकूल हो रहा है जो एक सकारात्मक संकेत है।

सस्ते → यह स्वाभाविक है कि किसी भी बाजार में एक से अधिक कम्पनी निर्मित वस्तुओं को लेकर आती है तो अपने बाजार तेज को बढ़ाने एवं उपभोक्ताओं को आकर्षित करने के लिए कम मूल्य पर वस्तुओं को बेचने का प्रयास करते हैं।

संचार → वैश्वीकरण का एक सकारात्मक पहलू यह है कि इसके चलते संचार व्यवस्था एवं सूचना प्रौद्योगिकी का प्रयोग किया जा रहा है जिससे गुणवत्ता में और भी वृद्धि दिखाई पड़ता है।

कृषि का विकास → वैश्वीकरण ने भारत जैसे कृषि प्रधान देश के लिए कृषि के क्षेत्र में निश्चित रूप से बढ़ावा दिया है और कृषि से संबंधित वस्तुओं के निर्यात में वर्तमान समय में बढ़ोतरी दिखाई पड़ रहा है जिसमें तकनीकि प्रयोग भी सहायक ~~सिद्ध~~ हुआ है।

Q. वर्तमान के सन्दर्भ में वैश्वीकरण का औचित्य की समीक्षा करें।
Q. भारत जैसे विकासशील देश में निजीकरण के औचित्य पर प्रकाश डालें।

वैश्वीकरण

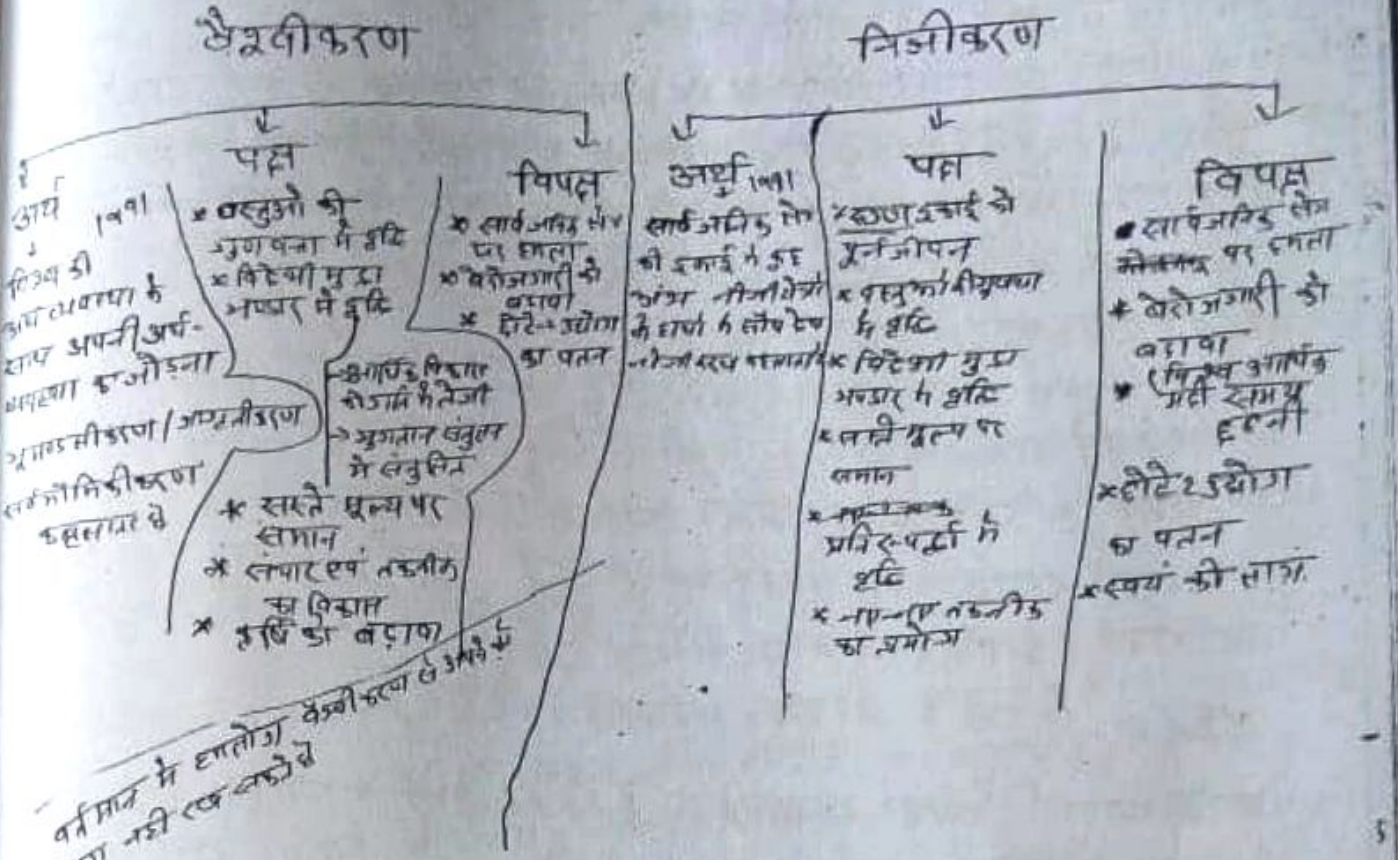

अर्थ — 1991 — विश्व की अर्थव्यवस्था के साथ अपनी अर्थव्यवस्था को जोड़ना भूमण्डलीकरण / अन्तर्राष्ट्रीयकरण / सार्वभौमिकीकरण कहलाता है

पक्ष
- वस्तुओं की गुणवत्ता में वृद्धि
- विदेशी मुद्रा भण्डार में वृद्धि
- आर्थिक विकास की दर में तेजी
- भुगतान संतुलन में संतुलित
- सस्ते मूल्य पर सामान
- व्यापार एवं तकनीक का विकास
- कृषि का बढ़ावा

विपक्ष
- सार्वजनिक क्षेत्र पर खतरा
- बेरोजगारी को बढ़ावा
- छोटे उद्योग का पतन

वर्तमान में हालांकि वैश्वीकरण से अलग है आजा नहीं रह सकते है

निजीकरण

अर्थ — सार्वजनिक क्षेत्र की इकाई में कुछ अंश निजी क्षेत्रों के हाथों में सौंप देना निजीकरण कहलाता है

पक्ष
- रुग्ण इकाई को पुनर्जीवन
- वस्तुओं की गुणवत्ता में वृद्धि
- विदेशी मुद्रा भण्डार में वृद्धि
- उचित मूल्य पर सामान
- प्रतिस्पर्धा में वृद्धि
- नए-नए तकनीक का प्रयोग

विपक्ष
- सार्वजनिक क्षेत्र पर खतरा
- बेरोजगारी को बढ़ावा
- विषम आर्थिक शक्ति उत्पन्न होनी
- छोटे उद्योग का पतन
- स्वयं की लाभ

1980 के दशक में भारत की अर्थव्यवस्था की स्थिति दयनीय थी। विदेशी मुद्रा की क्षति, भुगतान संतुलन असंतुलन, ऋण की धारी स्थिति तथा आर्थिक विकास दर आदि में कमी के कारण तत्कालीन सरकार को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा था। इसी परिपेक्ष में 1991 में नरसिम्हा राव की सरकार ने उदारीकरण की नीति को अपनाया और इस नीति का अनुसरण करते हुए वैश्वीकरण और निजीकरण के दौर में भारतीय अर्थव्यवस्था शामिल हो गई।

विश्व की अर्थव्यवस्थाओं के साथ अपनी अर्थव्यवस्था को एकीकृत करना भूमण्डलीकरण कहलाता है जो वर्तमान में विश्व के अधिकांश देशों के लिए अनिवार्य अंग के रूप में माना जा रहा है। भारत ने भी वैश्वीकरण को अपनाया लेकिन कुछ विद्वानों ने इसको सकारात्मक एवं अन्य विद्वानों ने इसे नकारात्मक रूप में वर्णन किया है जो निम्नलिखित है